Padma Bhushan

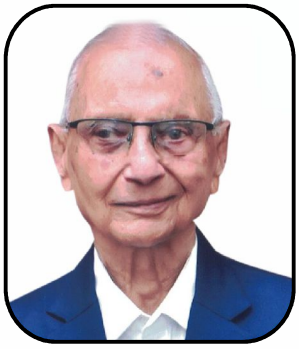

SHRI KAILASH NATH DIKSHIT

Shri Kailash Nath Dikshit is an archaeologist, author and editor of numerous works on Indian Civilisation and the Organiser and director of many archaeological expeditions.

2. Born on 20th June, 1936, Shri Dikshit took his M.A. degree in Ancient Indian History and Archaeology from Lucknow University and Post- Graduate Diploma in Archaeology from Archaeological Survey of India, he joined Archaeological Survey of India in 1957 and rose to become its Joint Director General by serving in different positions from 1957 to 1994. He is still organising the archaeological activities for the Indian Archaeological Society (IAS) in different parts of the country.

3. During his stint with the Archaeological Survey of India, Shri Dikshit has excavated and attended many excavations including Ujjain, Kalibangan, Bairat, Amkheri, Bargaon, Allahapur, Chiclim (Goa). In 1977 along the dried bed of Saraswati river, he investigated Nohar, Sothi and Sherpura. He also directed the project on "Archaeology of Ramayana Sites" in collaboration with Prof. B.B. Lal of Indian Institute of Advanced Studies, Shimla, excavated Ayodhya, Shringverpur, Bhardwaj Ashram, Pariar and Chitrakoot and also directed excavations at Hulas, an eastern most site of Harappa culture in western UP. He has visited museums at Berlin, Paris, London, Cambridge, Rome and Cairo. Under Cultural Exchange Programme and International conferences, he also visited Turkey, USSR, Sri Lanka, Paris, Luanda, Angola. As visiting fellow, he has been to Kansai University, Japan and Ulanbator (Mangolia) for providing a report on the conservation of Buddhist monasteries.

4. After his retirement in 1994, Shri Dikshit directed the Kampilya excavation (2000-01) with Ca Foscari University, Venice and delivered lectures at Venice and Padova (2001). He visited Canada (2007) to attend the ICOMOS conference. He attended the International Conference on Archaeology, in Islamabad, Pakistan (2012), and was in Johannesburg and Durban, South Africa (2012) to conceptualise the image of father of the nation Mahatama Gandhi at Pietermaritzburg Railway Station. He visited Kenya and Ethiopia for International Conference at Kisumu (2017) and Sri Lanka to attend the International Conference on Archaeology, History and Heritage and also delivered a public lecture at University of Kelaniya, Colombo (2019).

5. Shri Dikshit has authored more than 150 research papers, reviewed more than 60 books, edited a number of books and journals in the span of his career including Archaeological Perspectives of India since independence', Neolithic-Chalcolithic cultures of Eastern India, Megalithic Cultures of South India, Excavation at Hulas, Archaeological Survey of India and Origin of Indian Civilization: Recent Archaeological Data from Saraswati Basin. He was Editor of 'An Atlas of the Indus-Sarasvati Civilization' and has been editing Puratattva - an annual journal of the Indian Archaeological Society since 1978-84 and from 1990 - till date 2024 and History Today on behalf of History and Culture Society.

6. Shri Dikshit was bestowed with: Dr. Vishnu Sridhar Wakankar RashtriyaSamman, Bhopal (2010-11). M.S. University, Baroda, honoured him for his contribution to South Asian Archaeology (2012). Draupadi Trust New Delhi, felicitated him as the Best Archaeologist of the year (2014). Allahabad Museum conferred Life Time Achievement Award as the best Archaeologist 2018. He was conferred Member of Central Advisory Board of Archaeology (ASI), Museum Association of India (2015), Chennai, General Assembly, ICCR, Committee on National Museum Institute (2019 -22).He was awarded DAAD fellowship (1965-67). He has been honoured in 2018 by conferring the Doctor of Letters (D.Litt.) from Deccan College, Deemed University, Pune.

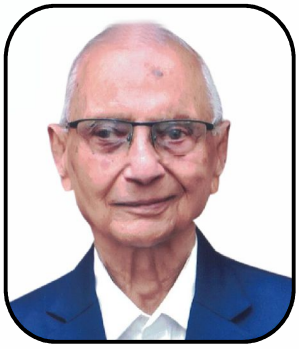

श्री कैलाश नाथ दीक्षित

श्री कैलाश नाथ दीक्षित एक पुरातत्वविद्, भारतीय सभ्यता पर कई कृतियों के लेखक व संपादक तथा पुरातत्व संबंधी कई अभियानों के आयोजक और निदेशक हैं।

2. 20 जून, 1936 को जन्मे, श्री दीक्षित ने लखनऊ विश्वविद्यालय से प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्व में एम.ए. की डिग्री और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण से पुरातत्व में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया। वह 1957 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में शामिल हुए और 1957 से 1994 तक विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए इसके संयुक्त महानिदेशक बने। वह अब भी देश के विभिन्न हिस्सों में भारतीय पुरातत्व सोसायटी (आईएएस) के लिए पुरातात्विक गतिविधियों का आयोजन करते हैं।

3. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में अपने कार्यकाल के दौरान, श्री दीक्षित ने उज्जैन, कालीबंगन , बैराट, अमखेरी, बड़गांव, अल्लाहपुर , चिक्लिम (गोवा) सहित कई स्थानों पर खुदाई करवाई और उत्खनन अभियानों में भाग लिया। वर्ष 1977 में सरस्वती नदी के सूखे तल के किनारे उन्होंने नोहर, सोथी और शेरपुरा की जांच की। उन्होंने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, शिमला के प्रो. बी.बी. लाल के साथ मिलकर "रामायण स्थलों के पुरातत्व" पर एक परियोजना का भी निर्देशन किया, अयोध्या, श्रृंगवेरपुर, भारद्वाज आश्रम, परियार तथा चित्रकूट की खुदाई की और पश्चिमी यूपी में हड़प्पा संस्कृति के सबसे पूर्वी स्थल हुलास में खुदाई का भी निर्देशन किया। उन्होंने बर्लिन, पेरिस, लंदन, कैम्ब्रिज, रोम और काहिरा के संग्रहालयों का दौरा किया है। सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के तहत उन्होंने तुर्की, यूएसएसआर, श्रीलंका, पेरिस, लुआंडा, अंगोला का दौरा भी किया। विजिटिंग फेलो के रूप में, उन्होंने बौद्ध मठों के संरक्षण पर एक रिपोर्ट उपलब्ध कराने के लिए कंसाई विश्वविद्यालय, जापान और उलनबटोर (मंगोलिया) की यात्रा भी की।

4. वर्ष 1994 में अपनी सेवानिवृत्ति के बाद, श्री दीक्षित ने वेनिस के कांपिल्य उत्खनन (2000–01) का निर्देशन किया और वेनिस तथा पडोवा (2001) में व्याख्यान दिए। उन्होंने आईसीओएमओएस सम्मेलन में भाग लेने के लिए कनाडा (2007) का दौरा किया। उन्होंने इस्लामाबाद, पाकिस्तान (2012) में पुरातत्व पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और पीटरमैरिट्जबर्ग रेलवे स्टेशन पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा तैयार करने में मदद करने के लिए जोहान्सबर्ग और डरबन, दक्षिण अफ्रीका (2012) गए। उन्होंने किसुमू में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (2017) में भाग लेने के लिए केन्या और इथियोपिया और पुरातत्व, इतिहास और विरासत पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए श्रीलंका का दौरा किया। उन्होंने केलानिया विश्वविद्यालय,कोलंबो में एक सार्वजनिक व्याख्यान (2019) भी दिया।

5. श्री दीक्षित ने अपने करियर में 150 से अधिक शोध पत्र लिखे हैं, 60 से अधिक पुस्तकों की समीक्षा की है, कई पुस्तकों और पत्रिकाओं का संपादन किया है, जिनमें 'स्वतंत्रता के बाद से भारत के पुरातत्व परिप्रेक्ष्य', पूर्वी भारत की नवपाषाण–ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ, दक्षिण भारत की महापाषाण संस्कृतियाँ, हुलास में उत्खनन, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और भारतीय सभ्यता की उत्पत्तिः सरस्वती बेसिन से हालिया पुरातात्विक डेटा शामिल हैं। उन्होंने 'सिंधु–सरस्वती सभ्यता का एटलस' का संपादन किया और 1978–84 तथा 1990 से 2024 में अब तक भारतीय पुरातत्व सोसायटी की वार्षिक पत्रिका पुरातत्व, और हिस्ट्री एंड कल्चर सोसायटी की ओर से हिस्ट्री टुडे का संपादन कर रहे हैं।

6. श्री दीक्षित को डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर राष्ट्रीय सम्मान, भोपाल (2010–11) से सम्मानित किया गया। एमएस विश्वविद्यालय, बड़ौदा ने उन्हें दक्षिण एशियाई पुरातत्व में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया (2012)। द्रौपदी ट्रस्ट नई दिल्ली ने उन्हें वर्ष के सर्वश्रेष्ठ पुरातत्वविद् (2014) का सम्मान प्रदान किया। इलाहाबाद संग्रहालय ने 2018 में उन्हें सर्वश्रेष्ठ पुरातत्वविद् के रूप में लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें केंद्रीय पुरातत्व सलाहकार बोर्ड (एएसआई), म्यूजियम एसोसिएशन ऑफ इंडिया (2015), चेन्नई, महासभा, आईसीसीआर, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान समिति का सदस्य चुना गया। उन्हें डीएएडी फेलोशिप (1965–67) से सम्मानित किया गया। 2018 में उन्हें डेक्कन कॉलेज, डीम्ड यूनिवर्सिटी, पुणे से डॉक्टर ऑफ लेटर्स (डी. लिट.) की उपाधि देकर सम्मानित किया गया है।